द्वितीय – अध्याय

पूर्व शोध अध्ययन

द्वितीय – अध्याय

** पूर्व शोध अध्ययन **

किसी भी विषय के विकास में किसी विशेष शोध प्रारूप का स्थान बनाने के लिये शोधकर्ता को पूर्व सिद्धान्तों एवं शोधों से भली भांति अवगत होना चाहिए । इस जानकारी को निश्चित करने के लिए व्यावहारिक ज्ञान में प्रत्येक शोध प्रारूप की प्रारंभिक अवस्था में इसके सैद्धांतिक एवं शोधित साहित्य का पुनर्निरीक्षण करना होता है ।

यह एक अन्वेषणात्मक परिधी है । भौतिक सुविधाओं एवं शैक्षिक उपलब्धि विषय पर भारत में अब तक कम शोध हुए है । कुछ अध्ययन कक्षा पर्यावरण एवं शैक्षिक पर्यावरण पर किये गये हैं जो भौतिक सुविधाओं शैक्षिक सुविधाओं के अन्तर्गत आते हैं उन्ही को यहाँ पर शामिल किया गया है ।

2.01 : विदेशों में किये गये शोध कार्य –

ड्रेसल तथा मेहिव (1954) – के अनुसार जिन महाविद्यालयों में विद्यार्थियों की समस्या पर ध्यान दिया जाता है उन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक होती है अपेक्षाकृत उन छात्रों से जिनकी समस्याओं पर ध्यान नही दिया जाता है ।

स्टेलजर (1960) – के शोध के अनुसार विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में पर्यावरण का महत्वपूर्ण स्थान है । यदि पर्यावरण अनुकूल हो तो शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च कोटि की होती है । यदि पर्यावरण प्रतिकूल हो तो शैक्षिक उपलब्धि पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है ।

रोजमैन (1962) – द्वारा सामाजिक रूप से पिछड़े छात्रों को देखकर शोध कार्य किया गया जो "कल्चरली डिप्राइण्ड चाईल्ड" शीर्षक के अंतर्गत प्रकाशित हुआ अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष निकाला गया कि छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि उनके वातावरण से प्रभावित होती है ।

ए.एच. पैसो तथा एम. गोल्डवर्ट (1967) – ने भी सामाजिक रूप से पिछड़े छात्रों की शिक्षा की समस्याओं का अध्ययन किया उन्होंने पाया कि यदि ऐसे बालको की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाना है, उन्हें शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करना है तथा उनकी विद्यालयीन समस्याओं का निराकरण करना है तो उन्हें दूषित वातावरण से निकालना होगा ।

मेंडिल (1967) – ने अध्ययन के द्वारा यह पाया कि ऐसे विद्यालय जहाँ शैक्षिक प्रतिस्पर्धा, बुद्धिवादी विषय वस्तु तथा योग्यता को महत्व दिया जाता है एवं प्राध्यापक वर्ग द्वारा कार्य की सराहना की जाती है और प्रोत्साहित किया जाता है, ऐसे विद्यार्थी अपने विद्यालय के प्रतिमान को बनाये रखने की ओर अग्रसर होते हैं और हमेशा अपने विद्यालय मानक को निश्चित बनाने तथा अपने उच्च स्तर को बनाये रखने की कोशिश करते हैं ।

एन्डरसन (1971) – ने अपने परीक्षण में बताया कि विद्यार्थियों की कम शैक्षिक उपलब्धि कुछ हद तक विद्यालय पर निर्भर करती है क्योंकि विद्यालय में पाठ्यक्रम पूर्ण करने के उद्देश्य से पढ़ाई की गति तीव्र होती है ।

हाझवेल (1980) – ने कक्षा पर्यावरण तथा विद्यार्थियों के प्रदर्शन में सम्बन्ध ज्ञात किया । इस अध्ययन के अनुसार कक्षा पर्यावरण तथा विद्यार्थियों के प्रदर्शन में धनात्मक सम्बन्ध होता है ।

डेजौन्ग (1993) – ने प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों के घर के व्यवहार अवधान और उपलब्धि के बीच सह सम्बन्ध पाया गया ।

2.02 : <u>भारत में किये गये शोध कार्य</u> –

पांडे (1981) – ने विद्यार्थियों में शैक्षणिक प्राप्ति को प्रेरित करने के लिए वातावरण के प्रभाव का एक कारक के रूप में अध्ययन किया उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि शहरी वातावरण, ग्रामीण वातावरण की तुलना में शैक्षणिक प्राप्ति के लिए अधिक उपयुक्त है, पूरी ने बताया कि वातावरण सुविधाओं का प्रभाव सामान्य शैक्षणिक प्राप्ति एवं अंग्रेजी भाषा में प्राप्ति दोनों के लिए ही महत्वपूर्ण था ।

बी.एन.एफ. कादिर (1981) – ने उत्तरप्रदेश के पीलीभित नगर में समुदाय के लोगों को उपलब्ध शैक्षिक अवसरों और उनके द्वारा उन अवसरों के उपयोग की समस्या को अध्ययन का आधार बनाया ।

अध्ययन सम्बन्धी उद्देश्य इस प्रकार थे ।

हिन्दुओं की तुलना में मुस्लिम समुदाय के छात्रों (1 से 10) कक्षा तक उपलब्ध शैक्षिक अवसरों के उपयोग की सुविधाओं का विश्लेषण करना ।

मुस्लिम बालको को शैक्षिक सुविधाओं का लाभ उठाने में अवरोध उत्पन्न करने वाले कारणों को ज्ञात करना तथा

तत्सम्बन्धी कुछ क्रियाशील सुझाव प्रस्तुत करना । इस अध्ययन द्वारा प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार है :–

मुस्लिम बालकों के लिए विशिष्ठ विद्यालयों का अभाव है ।

शिक्षा के उच्च स्तर पर केवल 8% मुस्लिम शिक्षक हैं ।

हिन्दु बाहुल्य एवं मुस्लिम बाहुल्य दोनों प्रकार के विद्यालयों के भवन शैक्षिक स्तर सहगामी क्रियाओं का स्तर, शिक्षण स्तर आदि असंतोषजनक हैं ।

जगननाधन (1985) – के अध्ययन ने शैक्षिक प्राप्ति पर वातावरण का महत्वपूर्ण प्रभाव की ओर ध्यान आकर्षित कराया । विद्यार्थियों को सिखने के स्थान पर जो वातावरण चर के रूप में प्रदान किया जाता है इसका अध्ययन देशपाण्डे (1984) डाक्टर (1984) और उपाध्याय (1982) ने किया । देशपाण्डे के अनुसार उच्च और निम्न उपलब्धि वाले विद्यालयों में अन्तर बनाने के लिए संगठनात्मक वातावरण को कोई विशिष्ट प्रभाव नहीं देखा गया । डाक्टर (1984) द्वारा किए अध्ययन ने शैक्षणिक प्राप्ति वातावरण और कक्षा के बीच सम्बन्ध बताया ।

पाल (1986) – विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता पर वातावरण के प्रभाव को अध्ययन करते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि वातावरण के कारण जैसे बालक की योग्यताओं को पहचानना, बालक की इच्छा को प्रोत्साहन, पालकों का स्नेह स्वयं करने, एवं स्वतंत्रता को प्रोत्साहित करना आदि । कई अध्ययन किए गए सृजनात्मक क्षमताओं के चार प्रकारों में प्रत्येक के साथ धनात्मक एवं महत्वपूर्ण सम्बन्ध था ।

कु. वंदना वाजपेयी (1987) – ने क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में एम.एड. स्तरीय शोध के अन्तर्गत कक्षा पर्यावरण शैक्षिक आत्मधारणा तथा विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि में सह सम्बन्ध का अध्ययन किया और पाया कि कक्षा पर्यावरण तथा शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सम्बन्ध है । यह उच्च सह सम्बन्ध है अतः कक्षा पर्यावरण का विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है ।

टीचर एजूकेशन फार डिसएडवाण्टेज चिल्ड्रेन रिपोर्ट ऑफ नेशनल वर्कशॉप आन रिफार्मस इन टीचर एजूकेशन (1989) – यूनेस्को, बैंकाक प्रतिवेदन के अंतर्गत भोपाल नगर में स्थित सेफिया विद्यालय जो पूर्णतः मुस्लिम समुदाय द्वारा संचालित किया जा रहा है, उसमें विद्यमान सुविधाओं का अध्ययन किया गया प्रतिवेदन द्वारा यह स्पष्ट होता है कि इन अल्प संख्यक विद्यालयों में 10 प्रतिशत बालिकाऐं मुस्लिम समुदाय की है, सन् 1989 में, इस विद्यालय में स्थान की कमी है ।

कु. सुषमा मिश्रा (1991–92) – ने क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय लघुशोध कार्य में बताया कि

(1) अल्पसंख्यक बालिका की तुलना में बहु संख्यक समुदाय की बालिकाऐं शैक्षिक अवसरों की सुविधाओं का लाभ उठा रही है ।

(2) नगर के प्राचीन भाग के सभी विद्यालयों में भवन सुविधा अन्य क्षेत्र के विद्यालयों की अपेक्षा न्यून है । भवन को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि यह भवन विद्यालयों के लिए नहीं बनाए गए । यहाँ के विद्यालयों में खेल के मैदानों का भी अभाव है तथा फर्नीचर साज सज्जा संबंधी भी बहुसंख्यक विद्यालयों की अपेक्षा न्यून है ।

(3) शासकीय तथा अशासकीय क्षेत्र वाले विद्यालय की शैक्षिक सुविधा तथा शैक्षिक उपलब्धि दोनों ही लगभग समान है ।

(4) शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर नहीं है, जबकि तुलना करने पर पाया गया कि शासकीय विद्यालय की शैक्षिक उपलब्धि अशासकीय विद्यालय की अपेक्षा अधिक है ।

(5) शासकीय विद्यालयों की अपेक्षा अशासकीय विद्यालय में सुविधाऐं भी अधिक है तथा छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि भी अधिक है ।

(6) सामान्य विद्यालयों की अपेक्षा औपचारिकेत्तर केन्द्रों मे न्यूनतम सुविधाऐं हैं किंतु शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अन्तर नहीं है ।

(7) विद्यालय में उपलब्ध शैक्षिक सुविधाओं का शैक्षिक उपलब्धि पर साधारण सा प्रभाव पड़ता है ।

(8) औपचारिकेत्तर विद्यालय तथा अनौपचारिकेत्तर विद्यालयों में उपलब्ध सुविधाओं का बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सह सम्बन्ध नहीं है ।

*** × ***